UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 01 | January – March 2018

"स्ववित्तपोषित एवं सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों के पुरुष एवं महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन"

राजेश कुमार शर्मा
शोध छात्र
मेवाड़ विश्वविद्यालय, गंगरार
चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

प्रो० (डॉ०) के०सी० बेहेरा
पर्यवेक्षक
मेवाड़ विश्वविद्यालय, गंगरार
चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

सारांश

किसी भी राष्ट्र की शिक्षा प्रणाली की सफलता उसके शिक्षकों पर निर्भर करती है, क्योंकि शिक्षक ही सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया का संवाहक है। अतः शिक्षा की गुणवत्ता एवं उन्नयन की दृष्टि से शिक्षकों का प्रशिक्षित होना अनिवार्य हो जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) ने शिक्षण–प्रशिक्षण कार्यक्रम को स्ववित्तपोषित संस्थानों को सौंपने की सिफारिश की जिसके पक्ष में यह तर्क था कि जनसंख्या वृद्धि को देखते हुए अधिक विद्यार्थियों को प्रवेश की सुविधा एवं रोजगार मिलेगा। प्रशिक्षण संस्थानों को आर्थिक लाभ होगा तथा आवश्यकतानुसार प्रशिक्षित अध्यापकों की पूर्ति हो सकेगी, लेकिन सरकारी सहायता प्राप्त तथा स्ववित्तपोषित संस्थानों में कार्यरत् पुरुष एवं महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि का स्तर भिन्न–भिन्न होता है। इसी का अध्ययन करने हेतु शोधार्थी ने उक्त विषय का चयन किया। तद्हेतु 9 सहायता प्राप्त शिक्षण संस्थानों तथा 11 स्ववित्तपोषित संस्थानों के 180 शिक्षक प्रशिक्षकों (पुरुष एवं महिला) का चयन यादृच्छिकी चयन विधि द्वारा किया। सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया। संकलित आंकड़ों के विश्लेषण से सरकारी सहायता प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्थानों के पुरुष एवं महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ।

मुख्य शब्दः– स्ववित्तपोषित, सरकारी, शिक्षक–प्रशिक्षक, कार्य–संतुष्टि।

प्रस्तावनाः–

यह तो सर्वविदित है कि किसी भी राष्ट्र की शिक्षा–प्रणाली की सफलता उनके शिक्षकों की कार्यक्षमता पर निर्भर करती है, क्योंकि शिक्षक ही सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया का संवाहक है। अतः शिक्षा की गुणवत्ता एवं उन्नयन की दृष्टि से शिक्षकों का प्रशिक्षित होना अनिवार्य हो जाता है। श्रेष्ठ शिक्षकों का निर्माण, उन्नत प्रशिक्षण पर निर्भर करता है। इसके लिए सुयोग्य, प्रवीण एवं दूरदर्शी शिक्षक–प्रशिक्षकों की आवश्यकता होती है।

अध्यापकों के प्रशिक्षण की आवश्यकता प्राचीन काल से ही रही है। अध्यापक शिक्षा के ऊषाकाल में हमारे देश में ब्रिटिश शासन तब ब्रिटिशों ने अपने तरीकों से अध्यापक शिक्षा में

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 01 | January – March 2018

प्रशिक्षण प्रारम्भ किया; लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् हमारे देश के शिक्षाविदों ने नवीन परिस्थितियों के आधार पर देश में शिक्षक–प्रशिक्षण का आरम्भ किया। यह सर्वविदित तथ्य है

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 01 | January – March 2018

कि भारत में विगत दो दशकों से शिक्षा के क्षेत्र में उदारीकरण एवं निजीकरण का दौर चल रहा है, जिसके कारण शिक्षा का क्षेत्र में पठन–पाठन, शोध के स्तर में उतार–चढ़ाव जारी है। इसी का परिणाम है कि शिक्षा एवं प्रशिक्षण के प्रत्येक स्तर पर निजीकरण के द्वार खुलने से गाँवों एवं शहरों में प्रशिक्षण संस्थान स्थापित हो गए हैं। अध्यापक शिक्षा के सन्दर्भ में सर्वप्रथम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) ने शिक्षण–प्रशिक्षण कार्यक्रम को स्ववित्तपोषित संस्थानों को सौंपने की सिफारिश की जिसके पक्ष में यह तर्क था कि जनसंख्या वृद्धि को देखते हुए अधिक विद्यार्थियों को प्रवेश की सुविधा एवं रोजगार मिलेग। प्रशिक्षण संस्थानों को आर्थिक लाभ होगा तथा आवश्यकतानुसार प्रशिक्षित अध्यापकों की पूर्ति हो सकेगी। निजी तन्त्र द्वारा स्थापित ये स्ववित्तपोषित शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थान क्या छात्राध्यापकों को वांछित एवं समयानुकूल प्रशिक्षण प्रदान कर पा रहे हैं? क्या सरकार द्वारा स्थापित संस्थानों में तथा स्ववित्तपोषित संस्थानों में संचालित शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम की गुणवत्ता में कोई भिन्नता है? क्या दोनों प्रकार के शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत् शिक्षक–प्रशिक्षकों की स्थिति में कोई भिन्नता है? क्या वे अपने कार्य से सन्तुष्ट हैं? इन्हीं सब प्रश्नों का उत्तर जानने के लिए ही शोधार्थी ने उक्त विषय का चयन किया है। कु० संगीता (2012) ने स्ववित्तपोषित संस्थानों एवं सरकारी संस्थानों में कार्यरत् शिक्षकों की कार्य–संतुष्टि व उसके चरणों का तुलनात्मक अध्ययन किया। नेनग्रम (2013) ने शिलांग के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य–संतुष्टि और संस्था प्रधानों/प्राचार्यों के नेतृत्व गुणों का अध्ययन किया। सक्सेना (2012) ने कार्य–संतुष्टि के शिक्षण व्यवसाय से सम्बन्धित तत्वों का अध्ययन किया। मंगलम (2013) ने लैंगिक आधार पर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य–संतुष्टि, कार्य–वास्तविकताएँ एवं कार्य सम्बन्धी आशंकाओं का अध्ययन किया। कोचर, जी०के० (2013) ने अवसाद व कार्य–संतुष्टि का अध्ययन महाविद्यालयी शिक्षकों के संदर्भ में किया। प्राप्त अध्ययनों से स्पष्ट है कि स्ववित्तपोषित एवं सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों के शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि सम्बन्धी अध्ययन शोधकर्त्ता को संतुष्ट नहीं कर पाए। यही कारण है कि शोधार्थी ने अपना ध्यान इस प्रमुख समस्या पर केन्द्रित किया।

अध्ययन के उद्देश्यः–

1. स्ववित्तपोषित एवं सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. स्ववित्तपोषित एवं सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. स्ववित्तपोषित एवं सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत पुरुष एवं महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 01 | January – March 2018

4. स्ववित्तपोषित एवं सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पाः–

1. स्ववित्तपोषित एवं सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. स्ववित्तपोषित एवं सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि सार्थक अंतर नहीं है।
3. स्ववित्तपोषित एवं सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि सार्थक अंतर नहीं है।
4. स्ववित्तपोषित एवं सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि सार्थक अंतर नहीं है।

प्रतिदर्शः–

प्रस्तुत शोध में सर्वप्रथम चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से सम्बद्ध शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों की सूची प्राप्त की, जिसमें 9 सरकारी सहायता प्राप्त शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थान तथा 87 स्ववित्तपोषित शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थान सम्मिलित थे। सम्पूर्ण जनसंख्या से 9 सरकारी सहायता प्राप्त शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थान एवं 11 स्ववित्तपोषित शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों का चयन यादृच्छिकी न्यादर्शन चयन विधि द्वारा किया। शोधार्थी द्वारा चयनित न्यादर्श का वितरण सारणी–1 में प्रस्तुत है–

सारणी–1

स्ववित्तपोषित एवं सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् शिक्षक–प्रशिक्षकों की न्यादर्श तालिका

स्ववित्तपोषित संस्थान	सरकारी सहायता प्राप्त संस्थान
87	09
यादृच्छिक विधि से चयनित संस्थान	समस्त सहायता प्राप्त संस्थान
कुल संख्या–11	कुल संख्या–9
चयनित शिक्षक–प्रशिक्षक	चयनित शिक्षक–प्रशिक्षक
107	73

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 01 | January – March 2018

कुल चयनित शिक्षक–प्रशिक्षक = 107 + 73 = 180 शिक्षक प्रशिक्षक

शोध उपकरणः–

प्रस्तुत शोध हेतु निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्रयुक्त उपकरण इस प्रकार हैं–

1. पी० कुमार एवं डी०एन० मुथा द्वारा निर्मित 'शिक्षक प्रभावशीलता मापनी।'
2. अमर सिंह एवं टी०आर० शर्मा द्वारा निर्मित 'कार्य–संतुष्टि मापनी।'
3. **प्रदत्त संग्रह–** प्रस्तुत शोध में प्रदत्त संकलन हेतु सर्वेक्षण की विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।
4. **फलांकन–** उक्त मापनी को शिक्षक–प्रशिक्षकों पर प्रशासित कर उनकी प्रतिक्रियाओं के आधार पर प्राप्तांक प्राप्त किए एवं प्राप्तांकों के आधार पर विविध सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया।
5. **प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ–** प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ इस प्रकार हैं–

(क) $M = \frac{\Sigma fx}{N}$ (ख) $S.D. = \sqrt{\frac{\Sigma fd^2}{N} - \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right)^2} \times C.L.$

(ग) $t = \frac{(\sigma_1)^2}{N_1} + \frac{(\sigma_1)^2}{N_2}$

6. **सार्थकता स्तर–** प्रस्तुत अध्ययन में परिकल्पनाओं का परीक्षण 0.05 तथा 0.01 स्तरों पर किया गया।
7. **प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या–** प्रस्तुत अध्ययन का पहला उद्देश्य स्ववित्तपोषित एवं सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना प्रस्तावित था। इसकी सांख्यिकीय गणना सारणी–2 में प्रस्तुत है–

सारणी–2

स्ववित्तपोषित एवं सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षक	संख्या	स्वतंत्रता अंश	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	'टी' मूल्य
स्ववित्तपोषित संस्थानों के पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षक	53	52	65.66	11.45	4.328
	26	25	79.11	13.67	

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 01 | January – March 2018

सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों के पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षक		77			

अपेक्षित 'टी' मान– 0.05 स्तर पर 1.99

0.01 स्तर पर 2.64

सारणी–2 के अनुशीलन से स्पष्ट है कि स्ववित्तपोषित संस्थानों के पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षक तथा सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों के पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि के मध्यमानों में प्राप्त अन्तर की सार्थकता हेतु आगणित 'टी' मान 4.328 प्राप्त हुआ। यह 'टी' मान 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीकृत मान 2.64 से अधिक है। अतः इस आधार पर परिकल्पना, "स्ववित्तपोषित एवं सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।" अस्वीकृत होती है। इस आधार पर हम यह कह सकते हैं कि सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि स्ववित्तपोषित संस्थानों के पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षकों की अपेक्षा उत्तम है।

प्रस्तुत अध्यय का दूसरा उद्देश्य स्ववित्तपोषित एवं सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना प्रस्तावित था। इसकी सांख्यिकीय गणना सारणी–3 में प्रस्तुत है–

सारणी–3

स्ववित्तपोषित एवं सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

महिला शिक्षक–प्रशिक्षक	संख्या	स्वतंत्रता अंश	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	'टी' मूल्य
स्ववित्तपोषित संस्थानों में महिला शिक्षक–प्रशिक्षक	54	53	66.46	11.65	2.18
सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों के पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षक	47	46 99	71.7	12.37	

अपेक्षित 'टी' मान– 0.05 स्तर पर 1.98

0.01 स्तर पर 2.63

सारणी–3 के अनुशीलन से यह स्पष्ट है कि स्ववित्तपोषित संस्थानों के महिला शिक्षक–प्रशिक्षक तथा सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों के महिला शिक्षक–प्रशिक्षक की कार्य–संतुष्टि के मध्यमानों में प्राप्त अन्तर की सार्थकता हेतु आगणित 'टी' मान 2.18 प्राप्त हुआ।

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 01 | January – March 2018

यह 'टी' मान 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणीकृत मात्र से अधिक है। अतः इस आधार पर परिकल्पना "स्ववित्तपोषित एवं सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है", अस्वीकृत होती है। इस आधार पर हम यह कह सकते हैं कि सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि स्ववित्तपोषित संस्थानों में कार्यरत् महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की अपेक्षा उत्तम है।

प्रस्तुत अध्ययन का तीसरा उद्देश्य सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् पुरुष एवं महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना प्रस्तावित था। इसकी सांख्यिकीय गणना सारणी–4 में प्रस्तुत है–

सारणी–4

सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् पुरुष एवं महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

शिक्षक–प्रशिक्षक	संख्या	स्वतंत्रता अंश	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	'टी' मूल्य
सरकारी सहायता प्राप्त पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षक	26	25	79.11	13.67	3.29
सरकारी सहायता प्राप्त महिला शिक्षक–प्रशिक्षक	47	46 71	71.7	12.37	

अपेक्षित 'टी' मान– 0.05 स्तर पर 2.00

0.01 स्तर पर 2.65

सारणी–4 के अनुशीलन से यह स्पष्ट है कि सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् पुरुष एवं महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि के मध्यमानों में प्राप्त अन्तर की सार्थकता हेतु आगणित 'टी' मान 3.29 प्राप्त हुआ। यह 'टी' मान 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीकृत मान से अधिक है। अतः इस आधार पर परिकल्पना "सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् पुरुष एवं महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है", अस्वीकृत होती है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षकों का कार्य–संतुष्टि स्तर महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की अपेक्षाकृत उच्च है।

प्रस्तुत अध्ययन का चौथा उद्देश्य स्ववित्तपोषित संस्थानों में कार्यरत् पुरुष एवं महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना प्रस्तावित था। इसकी सांख्यिकीय गणना सारणी–5 में प्रस्तुत है–

सारणी–5

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 01 | January – March 2018

स्ववित्तपोषित संस्थानों में कार्यरत् पुरुष एवं महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

शिक्षक–प्रशिक्षक	संख्या	स्वतंत्रता अंश	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	'टी' मूल्य
स्ववित्तपोषित संस्थानों के पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षक	53	52	65.66	11.45	2.23
स्ववित्तपोषित संस्थानों के महिला शिक्षक–प्रशिक्षक	54	53 105	66.46	11.65	

अपेक्षित 'टी' मान– 0.05 स्तर पर 1.98

0.01 स्तर पर 2.63

सारणी–5 के अनुशीलन में स्पष्ट है कि स्ववित्तपोषित संस्थानों में कार्यरत् पुरुष एवं महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि के मध्यमानों में प्राप्त अन्तर की सार्थकता हेतु आगणित 'टी' मान 2.23 प्राप्त हुआ। यह 'टी' मान 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणीकृत मान से अधिक है। अतः इस आधार पर परिकल्पना "स्ववित्तपोषित संस्थानों में कार्यरत् पुरुष एवं महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है", अस्वीकृत होती है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि स्ववित्तपोषित संस्थानों में कार्यरत् महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि का स्तर पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षकों की अपेक्षाकृत उच्च है।

शैक्षिक निहितार्थः–

प्रस्तुत अध्ययन स्ववित्तपोषित एवं सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्य–संतुष्टि के सम्बन्ध में विविध सूचनाएँ एवं सुझाव देगा, जिससे शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम की गुणवत्ता में उन्नयन किया जा सके।

संदर्भ ग्रंथ

1. राधाकृष्णन् उद्घृत रामसकल पाण्डेय, भारतीय शिक्षा दर्शन।
2. जॉन ड्यूवी उद्घृत सरोज सक्सैना शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक एवं समाजशास्त्रीय आधार।
3. जगदीश नारायण पुरोहित, भावी शिक्षकों के लिये आधारभूत कार्यक्रम।
4. डेन्ट उद्घृत माध्यमिक शिक्षा आयोग रिपोर्ट।
5. श्रीमद्भगवदगीता।
6. ए०पी०जे० अब्दुल कलाम, मेरे सपनों का भारत।
7. डॉ० आर०ए० शर्मा डॉ० शिक्षा चतुर्वेदी, अध्यापक प्रशिक्षण तकनीकी।

8. ए० मल्टीमन्त्र मॉडल ऑफ टीचर एजुकेशन फॉर द 21 सेन्चुरी, यूनिवर्सिटी न्यूज।
9. डॉ० आर०ए० शर्मा एवं डॉ० शिखा चतुर्वेदी, अध्यापक प्रशिक्षण तकनीकी।
10. के०पी० पाण्डेय यूनिवर्सिटी न्यूज (मई 02.05.2005)
11. सरस्वती अग्रवाल, निशा अग्रवाल (2009 : 298) उद्घृत चैलेन्जेज टू टीचर एजुकेशन इन 21 सेन्चुरी।
12. सार्जेट कमीशन उद्घृत, इंडिया टुडे, 7 जुलाई, 2005
13. प्रो० यू०एन० राव उद्घृत, इंडिया टुडे, 7 जुलाई, 2005
14. संगीता 2002, उच्च शिक्षा में स्ववित्तपोषण स्मारिका।